Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-4, Continuous Issue-10, November - December 2021

शुद्ध वनवासी

बाहर के ऑगन में बच्चे एक दूसरे का हाथ पकड़ कर गोल घेरा बना कोन्डवल्या खेल रहे है और जोर जोर से गा रहे हैं आमु काका बाबा ना पुर्‍या रे कोन्डवल्यों खेला डू, कोन्डवल्यों खेला डू, कोन्डवल्यों खेला डू। अचानक उस गोल घेरे को तोड़ते हुए एक व्यक्ति जख्मी हालत में घर में आता है। बच्चों का खेल बन्द हो जाता है। ये घर वीरसिंह का है, जुवानसिंह उसका बेटा है। बड़ा दिलेर आदमी है अपने नाम की तरह उत्साही जवान। आज फिर काली-खेतार पर उसका सामना गदड्या नाहर (लकड़बग्गे) से हो गया। जब वो नाहर मर नहीं गया उसने उसे छोड़ा नहीं तीर से गोद गोद कर मार डाला ।उसके खुद के शरीर पर बहुत सारे जख्म थे खुन लगातार बह रहा था। भूरी को समझ नही आ रहा था किस किस जगह कपड़ा बांधे। ताड़ी के दो कुल्हड़ पीकर वह बेसुध सा पड़ गया अब उसे दर्द महसुस नहीं हो रहा था। इसलिये नींद भी आ गई। इत्ती रात को जंगल में कोई और उपचार भी नहीं था और न उपचार की आदत थी। जीवटता भीलों का स्वभाव ही होता है।

और फिर जैसी प्रकृति मॉ की होती है वेसी ही तो बच्चो की होगी। शायद इसलिये धरती को मॉ कहते हैं जैसी मॉ की कोख की तासीर होती है बच्चे की भी तासीर वैसी ही हो जाती है। यही कारण है कि भीलांचल की कोख की कठोरता ने वहॉ के लोगों को भी कठोर बना दिया है। यहॉ के लोग अपनी धरती की तरह सख्त हैं। इस कठोर भूमि में खाने के लिये मक्का और पीने के लिये महुए की शराब और ताड़ी ही तो है। इस वनवासी भूमि का जन बिल्कुल अपनी मॉ पर गया, साफ मन का स्वछन्छ, जीवन जीने वाला दुखनिरपेक्ष। पत्थरों के बीच कठिन जीवन जीते हुए भी कष्टों का रोना नहीं रोता, अपनी मस्ती में फक्कड जीवन जीता है। जगह जगह खिली हुई केसुड़ी (टेसु) को उसके आसपास की बांझपन से कोई फर्क नहीं पड़ता उसके रंग की चटक कभी फीकी नहीं पड़ती। उसी तरह भीलों का मन अभावों के बियाबान मे भी विचलित नहीं होता है। भीलों में जब बच्चा पैदा होता है तो उसे एक साल तक नंगे बदन रखा जाता है ठंड, गर्मी बरसात तीनों मौसम की मार वह नंगे बदन झेलता है उसके तन और मन की कठोर भूमि यहीं से तैयार होती है। इसी कठोर भूमि ने जुवानसिंह को भी पाला था। मॉ भूरी बाई और पिता वीरसिंह की आधा दर्जन संतानों में वह सबसे छोटा था।

जुवानसिंह ने बचपन से ही अपने पिता को गाते बनाते देखा था। जब कभी भी किसी का गाता निकलता उसके मन में न जाने कैसे कैसे विचार आते थे। गाते के पीछे पीछे चलने वाले रोते गाते लोगों में वह भी अपनी माँ के साथ कई बार शामिल हुआ था। बचपन में उसने एक बार अपने पिता से पुछा था कि ये किसकी मूर्ति बना रहे हो। उसके पिता ने उसे बताया था कि जिन लोगो की अकाल मृत्यु हो जाती है उन्है श्मशान नहीं ले जाया जाता, उनका दाह-संस्कार उनके खेत में ही कर दिया जाता है। फिर उनकी मूर्ति बनाई जाती है। पत्थर पर उकेरी हुई उस मूर्ति को ही गाता कहते है। मैं वही गाते बनाता हूँ। पिताजी ने उसे समझाते हुये कहा था- उस गाते करे सम्मान के साथ गाते बजाते ले जाकर उसी व्यक्ति के खेत में ही स्थापित कर देते है। अलग अलग त्यौहारों पर उनकी पूजा की जाती है।

न जाने क्यों जुवानसिंह के बालमन में गाते का आकर्षण बैठ गया। और धीरे धीरे वह भी अपने पिता के समान गाते बनाने के काम में निपुण हो गया। छेनी से तराशते हुए जब वह किसी का चित्र उस पर उकेरता तो न जाने कहाँ खो जाता।

उन दिनो भाबरा से चन्द्रशेखर आजाद की जगाई हुई आजादी की अलख वनवासी भीलों में जग चुकी थी, उधर धार मानपुर में टंट्या भील आजादी की लड़ाई में अपने प्राणों का उत्सर्ग करने को आतुर था। इधर इसकी आँच अम्बा बोरझाड तक के युवाआ के मन को सेंक रही थी। चन्द्रशेखर आजाद की हत्या ने सबके खुन में उबाल ला दिया था। अलीराजपुर से अम्बा-बोरझाड़ के मध्य क्षेत्र के भील बड़े ही खुंखार माने जाते थे। चन्द्रशेखर आजाद की हत्या का बदले भीलों ने अंग्रेजो का जीना हराम कर देने की ठानी थी। जुवानसिंह ने तो कसम खाई थी कि वो अपने क्षेत्र के अंग्रेजो में से किसी को भी जीवित नहीं छोड़ेगा।

वो शनिवार की रात थी, आज के दिन अंग्रेज साहब बहादुरो की गाड़ियाँ अलीराजपुरा से जोबट के लिये निकलती थी। जोबट उस क्षेत्र का सबसे सम्पन्न गाँव था। जोबट का डाक-बँगला अंग्रेजो को बहुत रास आता था। दो दिनों तक पानियें और कड़कनाथ और दारू पीकर पड़े रहते थे। उसके बाद ही वे अपने अपने स्थानों पर लौटते थे।

घने जंगलों की शान्ति में विघ्न डालती गाड़ियों की आवाज से जुवानसिंह और उसके साथियों को संकेत मिल चुका था। सड़क पर रास्ता रोकने को लकड़ी के डूंड पटक दिये गये थे और हाथों में तीर कमान लिये वो तैयार थे। तीव्र गति से आती हुई गाड़ी को रूकना पड़ा ,जैसे ही डूंड हटाने के लिये अंग्रेज बाबु बाहर निकला जुवान सिंह और उसके साथियों ने उसे घेर लिया। आज उसका बचना नामुमकिन था। तभी उसे बच्चों के रोने की आवाज आई उसने कार में झांका अन्दर दो बच्चों के साथ एक गोरी मेम डरी हुई बैठी थी। जुवानसिंह की कठोर प्रतिज्ञा भी एक माँ और उसके दो अबोध बच्चों को नहीं मार सकी। बहरहाल उन्हें जाने दिया

गया। एक खुंखार राठ के मन में भी संवेदना द्वार खुला हुआ था। इस डरे हुये परिवार को वो स्वयं जंगल के बाहर गाँव की हद तक छोड़ के आया था।

एक भील राठ अपनी बात का पक्का और सच्चा होता है। किन्तु जुवानसिंह का मन आज बहुत विचलित था। उसे बार बार लग रहा था कि उसने अपनी प्रतिज्ञा पुरी न करके अपने आप को और देश को दोनो का धोखा दिया है। पर इसमे उसका क्या दोष? वह तो प्रकृति पूजक है ओर उसकी पालक प्रकृति ने उसे यही तो सिखाया है। जब जब धरती की छाती सूख कर फटने लगती है, पावस की फुहारे उसके दग्ध हृदय को शीतल करती है। कड़कड़ाती ठंड में भी धुप का कम्बल ओढ़ाना नहीं भूलती। कमजोर बेलाओं को मजबुत पेड़ो का सहजीवी बनाना और अंकुरण के समय मिट्टी को नहीं खोदना, सब कुछ तो प्रकृति ने सिखाया है। अब जो वन देवता ने सिखाया, उसे कैसे भूल सकता था वह। वो न तो उन नवाकुंरो को उखाड़ सकता था न उनकी जड़े खोद सकता था। पर कहीं न कहीं प्रतिज्ञा पूरी न कर पाने का दुख उसके मन को बैचेन किये दे रहा था। उसे लगा वह भील समाज पर कलंक है। भीलों के बारे में तो कहा ही जाता है कि 'खारड़ा म काटो न भील म ऑटो'' फिर आजाद की मौत का बदला वह कैसे भूल गया। क्या वो सच्चा भील नहीं है। और आगे! आगे क्या करेगा अगर फिर ऐसी स्थिति बनी तो? फिर छोड़ देना पड़ेगा।

सूरज चढ़े के बाद सोना उसके लिये कभी संभव नहीं था। उसकी माँ भूरी उसे सोने ही नहीं देती थी।

जब तक वह उठ नहीं जाये बड़बड़ाती ही रहती थी -

ऐ जुवानसिंह उठ ''वहाणों चुक्यो ने दहाणों चुक्यों''।

आज उसे ऐसा लग रहा था कि उससे जिन्दगी का वहाणा (प्रातः काल) चुक गया है। फक्कड़, मस्ती भरा जीवन जीने वाला जुवानसिंह आज पहली बार विचलित था। उसे नहीं पता जो हुआ वो सही था या गलत।' अधिक देर चिन्तित रहना उसके स्वभाव में नही था। क्योंकि 'भील भाई ने डगले दीवो' ही उनके जीवन का सुत्र था। वह बदला तो जरूर लेगा चाहे कोई दूसरा रास्ता ही क्यों न ढूंढना पड़े। आजाद के जीवन का बदला तो उसे लेना ही होगा अब उसे चाहे किसी की जान लेनी पड़े या खुद की देनी पड़े। उसने पहले जो किया वो भी सही था और अब जो करेगा वो भी सही ही होगा। वह वनवासियों के माथे का कंलक नहीं है। एक भील का मन कभी मेला नहीं होता। वह शुद्ध वनवासी है।

वो एक दृढ़ निश्चय के साथ उठा और छेनी हथौड़ी ले कर पत्थर पर आकृति उकेरने लगा। उस कच्चे पत्थर पर उसे कभी अपना चित्र दिखाई देता तो कभी फिरंगियों का। गाता बनना तो अब तय था। क्योंकि वह अपना मन तराश चुका था।

डॉ.साधना बलवटे

ई-२/३४६, अरेरा कॉलोनी भोपाल म.प्र.